पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् ।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ।।४३।।

पिता=जन्मदाता; **असि**=हैं; **लोकस्य**=सम्पूर्ण जगत् के; **चराचरस्य**=चराचर; **त्वम्**=आप; **अस्य**=इसके; **पूज्यः**=अति पूजनीय; **च**=तथा; **गुरुः**=स्वामी; **गरीयान्**=महिमामय; **न**=नहीं; **त्वत्**=आपके; **समः**=समान; **अस्ति**=है; **अभ्यधिकः**=अधिक महिमामय; **कुतः**=किस प्रकार; **अन्यः**=दूसरा; **लोकत्रये**=तीनों लोकों में; **अपि**=भी; **अप्रतिम**=अनन्त; **प्रभाव**=शक्ति।

अनुवाद

हे विष्णो ! आप इस चराचर सम्पूर्ण जगत् के पिता और परम पूजनीय गुरु हैं। हे अनन्त-प्रभाव ! त्रिलोकी में आपके समान भी दूसरा कोई नहीं है, फिर अधिक कैसे होगा ? ।।४३।।

तात्पर्य

जिस प्रकार पुत्र के लिये पिता पूज्य होता है, वैसे ही भगवान् श्रीकृष्ण सम्पूर्ण जगत् के आराध्य हैं। वे जगद्गुरु हैं; सृष्टि के आदि में उन्होंने ब्रह्मा के हृदय में वैदिक ज्ञान का संचार किया था और वर्तमान में वे ही अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश कर रहे हैं। अतएव वे आदिगुरु हैं और वर्तमान काल में सद्गुरु वही है, जो श्रीकृष्ण की शिष्यपरम्परा में हो। श्रीकृष्ण के सच्चे प्रतिनिधि के अतिरिक्त दूसरा कोई भागवतधर्म का आचार्य नहीं हो सकता।

श्रीभगवान् को सब प्रकार. से प्रणाम किया जा रहा है। वे अनन्त महिमामय हैं; प्राकृत-अप्राकृत दोनों सृष्टियों में दूसरा कोई भी श्रीकृष्ण के समान अथवा उनसे अधिक नहीं है। सभी उनसे कम हैं, उनकी समानता कोई नहीं कर सकता।

साधारण मनुष्य के सदृश, श्रीकृष्ण भी इन्द्रियों और देह से युक्त हैं। किन्तु उनमें यह वैशिष्ट्य है कि उनकी इन्द्रियों, देह, मन और स्वयं उनमें भेद नहीं है। श्रीकृष्ण के तत्त्व को पूर्णतया न जानने वाले मूर्ख ही ऐसा कहा करते हैं कि श्रीकृष्ण अपने आत्मा, हृदय, आदि से भिन्न हैं। वास्तव में तो श्रीकृष्ण भेदरहित परमसत्य हैं; इसी से उनकी क्रियाएँ और शक्तियाँ अद्वय हैं। शास्त्रों में तो यहाँ तक कहा है कि उनकी इन्द्रियाँ हमारी इन्द्रियों जैसी नहीं हैं; इसलिए अपनी किसी भी इन्द्रिय से वे अन्य सब इन्द्रियों की क्रिया कर सकते हैं; कारण—उनकी इन्द्रियाँ हमारे समान न तो दूषित हैं और न ही अपूर्ण हैं। अस्तु, उनके समान अथवा उनसे अधिक कोई नहीं हो सकता, सभी उनसे नीचे हैं।

श्रीकृष्ण की दिव्य देह, क्रियाओं और पूर्णता को जानने वाला पुरुष देहत्याग कर उन्हें प्राप्त कर लेता है, फिर इस दुःखमय संसार में नहीं आता। इससे सिद्ध होता